International Journal of Global Multidisciplinary Research and Analytics
IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
October-December 2025 | Vol. 01 | Issue 3
Website: www.thearyapublication.com

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

[1]आशीष पाण्डेय* & [2]डॉ. प्रमोद जोशी

*[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ईमेल: bantipandeytc@gmail.com
[2]सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ईमेल: pramodjoshi@hindivishwa.ac.in

DOI: doi.org/10.5281/zenodo.18211377
Accepted on: 31/12/2025 Published on: 10/01/2026

सारांश:

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और नैतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान, भाषा-विज्ञान, कला एवं शिल्प जैसी समृद्ध परंपराएँ सम्मिलित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) इस प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समन्वित करने का एक सशक्त प्रयास है। यह नीति भारतीय मूल्यों, स्थानीय ज्ञान, मातृभाषा आधारित शिक्षा, बहुविषयक दृष्टिकोण और समग्र विकास पर विशेष बल देती है। NEP 2020 का प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों में ज्ञान के साथ-साथ नैतिकता, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। नीति भारतीय ज्ञान प्रणालियों (Indian Knowledge Systems – IKS) को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने, योग, ध्यान, पर्यावरण चेतना, और जीवन कौशलों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की अनुशंसा करती है। साथ ही, यह नीति प्राचीन और आधुनिक ज्ञान के समन्वय द्वारा वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप सक्षम मानव संसाधन तैयार करने का लक्ष्य रखती है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच का संबंध शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, मूल्य-आधारित और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जो भारत की आत्मनिर्भरता और सतत विकास के लक्ष्य को सुदृढ़ करता है।

मुख्य शब्द: *भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।*

प्रस्तावना:

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और सतत ज्ञान धाराओं में से एक रही है। यह परंपरा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र—दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, भाषा,

कला, पर्यावरण, समाज और नैतिक आचरण—से गहराई से जुड़ी रही है। वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, पुराण, बौद्ध-जैन साहित्य, योग और आयुर्वेद जैसे ज्ञान स्रोतों ने मानव जीवन को संतुलित, मूल्यनिष्ठ और समग्र बनाने की दिशा में मार्गदर्शन किया है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल उद्देश्य सदैव व्यक्ति के बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व देना रहा है। औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली धीरे-धीरे अपनी मूल ज्ञान परंपरा से विमुख होती गई और पश्चिमी मॉडल पर आधारित हो गई। परिणामस्वरूप शिक्षा का उद्देश्य रोजगारोन्मुखता तक सीमित हो गया तथा नैतिक, सांस्कृतिक और जीवनोपयोगी मूल्यों का ह्रास हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात भी शिक्षा सुधार के अनेक प्रयास हुए, किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता लंबे समय तक महसूस की जाती रही।इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐतिहासिक पहल के रूप में सामने आई है। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करने का प्रयास करती है। मातृभाषा में शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन, कौशल विकास, नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों का संवर्धन, तथा 'सीखने के लिए सीखना' जैसी अवधारणाएँ इस नीति के प्रमुख आधार हैं। NEP 2020 का उद्देश्य ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना है जो न केवल वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी हो, बल्कि भारतीय संस्कृति और मूल्यों से भी गहराई से जुड़ी हो। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समन्वय शिक्षा को मूल्य-आधारित, समावेशी और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परिचय इस अध्ययन के लिए वैचारिक आधार प्रदान करता है, जिसके अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान और आधुनिक भारत के शैक्षिक विकास में सेतु का कार्य कर रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्वरूप अनुभव, तर्क और आत्मबोध पर आधारित रहा है। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना के संचय के रूप में नहीं, बल्कि विद्या के रूप में देखा गया है, जिसका उद्देश्य मानव को अज्ञान से ज्ञान की ओर, असंतुलन से संतुलन की ओर तथा स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाना है। गुरुकुल प्रणाली में गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से शिक्षा जीवन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी थी, जहाँ चरित्र निर्माण, अनुशासन, सेवा, और प्रकृति के साथ सामंजस्य को विशेष महत्व दिया जाता था। यह व्यवस्था विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, नैतिक और समाजोन्मुख नागरिक बनाने में सहायक थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी समग्र दृष्टिकोण को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती

है। यह नीति रटंत प्रणाली के स्थान पर अनुभवात्मक अधिगम, खोज-आधारित शिक्षा और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल आत्मा के अनुरूप है। 'एक विषय–एक मार्ग' की संकीर्ण अवधारणा को त्यागकर बहुविषयक और बहुभाषी शिक्षा को अपनाने पर बल दिया गया है, जिससे विद्यार्थी ज्ञान को समग्रता में समझ सकें। NEP 2020 में भारतीय भाषाओं को शिक्षा का सशक्त माध्यम बनाने की स्पष्ट अनुशंसा की गई है। यह पहल न केवल सीखने की प्रक्रिया को सहज बनाती है, बल्कि स्थानीय ज्ञान, लोक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने में भी सहायक है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों जैसे आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, वास्तु, कृषि ज्ञान, जल प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित पारंपरिक विधाओं को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ जोड़ने की परिकल्पना इस नीति को विशिष्ट बनाती है। इसके अतिरिक्त, नीति शिक्षक को केवल पाठ्यवाचक न मानकर मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में देखती है, जो भारतीय गुरु परंपरा के अनुरूप है। शिक्षा में नैतिकता, संवेदनशीलता, सह-अस्तित्व और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी अवधारणाओं को स्थान देकर NEP 2020 एक ऐसे मानव-केंद्रित शिक्षा मॉडल की स्थापना करती है, जो न केवल राष्ट्र निर्माण में सहायक है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों के समाधान की दिशा में भी सार्थक योगदान देता है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समन्वय शिक्षा को मात्र डिग्री प्राप्ति से आगे ले जाकर जीवन निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है, जो इस अध्ययन के आगामी विश्लेषण का केंद्रीय विषय रहेगा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की विशेषताएँ:

- भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्मिक, दार्शनिक, कलात्मक और वैज्ञानिक ज्ञान की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो भारतीय की सांस्कृतिक पहचान और बौद्धिक विचार को व्यक्त करता है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय भाषाओं कला तथा संस्कृति को बढ़ावा देने पर विशेष जोर देता है।
- भारतीय ज्ञान पंरपरा में जन-जातीय ज्ञान के साथ-साथ स्वदेशी पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में है गणित, दर्शन, योग, खगोल विज्ञान चिकित्सा, वास्तुकला, इंजीनियरिंग, कृषि, साहित्य, भाषा-विज्ञान, खेल के साथ-साथ राजनीति, शासन और संरक्षण शामिल होंगे।
- भारतीय ज्ञान प्रणाली में शिक्षा या या ज्ञान ज्ञान का का मुख्य मुख्य उद्देश्य उद्देश्य (सत्य (सत्य की की खोज) खोज) जिज्ञासु जिज्ञासु। व्यक्ति उचित मार्गदर्शन द्वारा ज्ञान की खोज कर सकता है।

- भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्ध परंपरा के अन्तर्गत 2020 की राष्ट्रीय शिक्षानीति समग्र बहुविषयक अनुशासन शिक्षा, शिक्षक-प्रशिक्षण एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व:

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम ज्ञान प्रणालियों में से एक मानी जाती है। राधाकृष्णन (2009) ने भारतीय दर्शन, वेदांत और योग के माध्यम से जीवन-केन्द्रित शिक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की है, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी या व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मबोध और नैतिक विकास को भी शामिल किया गया है। शर्मा (2010) के अनुसार आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तु, गणित और खगोल विज्ञान जैसी प्रणालियाँ ज्ञान के विभिन्न आयामों को उजागर करती हैं और यह सिद्ध करती हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में सीखने का उद्देश्य हमेशा जीवन और समाज से जुड़े रहने का रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का अनुभवात्मक और प्रयोगात्मक स्वरूप प्रमुख रहा है। गुरुकुल प्रणाली इसका उत्तम उदाहरण है, जहाँ शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि विद्यार्थी जीवन कौशल, समाजोपयोगी व्यवहार, प्रकृति के साथ सामंजस्य और आत्मनियंत्रण सीखते थे। यह परंपरा आज भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए प्रेरक है, क्योंकि यह ज्ञान और मूल्य आधारित शिक्षा का संयोजन प्रस्तुत करती है।

शिक्षा में नैतिकता और मूल्य आधारित दृष्टिकोण:

सरीन (2019) और कुमार (2014) के अनुसार, भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों का समावेश अनिवार्य था। गुरु–शिष्य परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं था; इसमें विद्यार्थी के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी समान महत्व दिया गया। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है, विशेषकर मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास के लिए। NEP 2020 में भी शिक्षा के मूल्य आधारित दृष्टिकोण को प्रमुखता दी गई है। नीति जीवन कौशल, योग, ध्यान और चरित्र निर्माण के माध्यम से नैतिकता और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करने पर जोर देती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 दोनों ही शिक्षा के उद्देश्य को केवल ज्ञान और रोजगार तक सीमित नहीं रखते, बल्कि इसे जीवन और समाज के कल्याण के लिए समग्र रूप से तैयार करते हैं।

NEP 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणालियों का समावेश:

भारत सरकार (2020) द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणालियों (Indian Knowledge Systems – IKS) को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर विशेष बल दिया गया है। नीति मातृभाषा आधारित शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और जीवन कौशलों के समावेश को प्राथमिकता देती है। योग, ध्यान, पारंपरिक विज्ञान और कला जैसे विषयों का पाठ्यक्रम में समावेश न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्मान करता है, बल्कि विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रीय पहचान को भी मजबूत करता है। NEP 2020 का उद्देश्य शिक्षा को अनुभवात्मक और प्रयोगात्मक बनाना है। यह नीति विद्यार्थियों को केवल सूचना ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि ज्ञान के सृजनकर्ता और सामाजिक बदलाव के संवाहक बनाने की दृष्टि रखती है। नीति में शिक्षकों को मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पारंपरिक गुरु–शिष्य परंपरा की आधुनिक व्याख्या है।

वैश्विक दृष्टिकोण और प्रासंगिकता:

UNESCO (2015) ने वैश्विक स्तर पर शिक्षा के उद्देश्य को मानव केंद्रित, सतत और सामाजिक कल्याण के आधार पर परिभाषित किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 के सिद्धांत इसी वैश्विक दृष्टिकोण के अनुरूप हैं। ये न केवल रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि शिक्षा को मानवीय, नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक बनाते हैं। विश्वभर में शिक्षा के मॉडल अधिकतर तकनीकी दक्षता और नौकरी-उन्मुखता पर केंद्रित हैं, जबकि भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का दृष्टिकोण विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, बहुभाषिक क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने पर केंद्रित है। यह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारतीय शिक्षा को न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाता है, बल्कि संस्कृति, मूल्य और मानवीय दृष्टिकोण के मामले में भी अद्वितीय बनाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता:

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और तीव्र सामाजिक परिवर्तन के युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल भौतिक उन्नति या रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं रह गया है। आज आवश्यकता ऐसी शिक्षा प्रणाली की है जो

व्यक्ति को बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ नैतिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों से भी समृद्ध करे। इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और आवश्यकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन को समग्र दृष्टि से देखने की शिक्षा देती है। यह ज्ञान, कर्म और भक्ति के संतुलन पर आधारित है, जिससे व्यक्ति में आत्मबोध, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, नैतिक मूल्यों के क्षरण और पर्यावरणीय संकटों के समाधान के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित योग, ध्यान, अहिंसा, संतोष और सह-अस्तित्व जैसी अवधारणाएँ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। आज की शिक्षा प्रणाली में स्थानीय ज्ञान, परंपरागत कौशल और सांस्कृतिक पहचान उपेक्षित होती जा रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्स्थापना से न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होगा, बल्कि स्वदेशी ज्ञान, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पारंपरिक कृषि, औषधीय विज्ञान और हस्तशिल्प को भी नया जीवन मिलेगा। इससे आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को बल मिलेगा और शिक्षा समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जुड़ेगी। इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान परंपरा आलोचनात्मक चिंतन, संवाद और तर्क को महत्व देती है। उपनिषदों के प्रश्नोत्तर संवाद, बौद्ध विमर्श परंपरा और दर्शनशास्त्र की तर्कशैली आधुनिक शैक्षणिक चिंतन को अधिक गहन और सृजनात्मक बना सकती है। यह विद्यार्थियों को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि चिंतनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता केवल अतीत की ओर लौटने के लिए नहीं, बल्कि भविष्य की चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए है। यह परंपरा आधुनिक शिक्षा को मानवीय, संतुलित और मूल्य-आधारित बनाकर समाज, राष्ट्र और विश्व के समग्र कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान परंपरा का एक समग्र दृष्टिकोण से जुड़े हुए हैं। जो "भारत का ज्ञान" में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसके योगदानों की सिफारिश करता है। यह नीति बहु विषयक शिक्षा प्रणाली की वकालत करती है जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण के अनुरूप है या राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान कुशलता और कौशलता जो एक पीढ़ी के दूसरे पीढ़ी को विरासत में मिली है कुछ सीखने के स्वदेशी एवं पारंपरिक

तरीकों को समाहित करने की सिफारिश करती है साथ ही साथ गणित खगोल विज्ञान दर्शन योग वास्तुकला चिकित्सा शास्त्र कृषि अभियांत्रिकी भाषा विज्ञान साहित्य खेल के साथ-साथ शासन प्रशासन राज व्यवस्था संरक्षण आदि विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की भी सिफारिश करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 स्नातक शिक्षा के दौरान ऐसी शैक्षणिक पद्धतियां जो विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और गणित के साथ-साथ मानविकी और कला शिक्षा को भी समाहित करती है। यह नीति रचनात्मकता, नवाचार शिक्षण, आलोचनात्मक चिंतन और उच्चतर स्तरीय चिंतन की क्षमता समस्या, समाधान योग्यता समूह कार्य में कुशलता, दक्षता, संप्रेषण कौशल और सीखने में गहराई और पाठ्यक्रम के सभी विषयों पर पकड़ सामाजिक और नैतिकता के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देती है। जिससे सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं और साथ ही समग्र बहू विषयक शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और बढ़ोतरी दिख रही है। जहां तथागत महात्मा बुद्ध ने समता, समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व और विश्वशांति का संदेश दिया। इस संदेश को विश्वरत्न, कुलभूषण भारत के संविधान रचयिता डॉ० बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान में अनुच्छेदों के माध्यम से हम भारत के लोगों को समर्पित किया है। जहां दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श को भी विकास के मुख्य धारा से जोड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। और भारतीय ज्ञान परंपरा को चतुर्मुखी बनाने के संकल्पों के साथ इस भारत की धारा को स्वर्णिम बनाने में प्रमुख भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। अर्थात लिक्ष्वी गणराज्य का गणतंत्र, भारत के स्वतंत्र विचार अभिव्यक्ति इसी भारत की जड़त्व को प्रदर्शित करती है। जो भेदभाव, छुआछूत, अश्पृश्यता, ऊंच-नीच मुक्त विश्व जगत भारत का स्वप्न देख रहा है। उसे साकार करने हेतु दृढ़ संकल्पित और दृढ़ इच्छाशक्ति से अधिनियमित, अंगीकृत और आत्मार्पित करते हुए भारत लोकतांत्रिक विश्व गुरु बनेगा। पूरा विश्व भारत को लालयित आंखों से देख रहा है और अपना प्रतिनिधि स्वीकार करने हेतु इच्छुक हैं। जो राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी की कविता रश्मिरथी से अधोलिखित है:

"वसुधा का नेता कौन हुआ
भूखंड विजेता कौन हुआ,
अतुलित यश क्रेता कौन हुआ
नव धर्म प्रणेता कौन हुआ
जिसने न कभी आराम किया
विघ्नों में रहकर नाम किया।"

इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा बोर्ड गठन करने, सैकड़ों गुरुकुल बनाने, भारतीय भाषाओं को इसका माध्यम बनाने और शिक्षा का सर्व व्यापीकरण करने पर जोर दिया जा रहा है। भारतीय सभ्यता संस्कृति जो पुरातन वेधशाला, आयुर्वेद, जड़ी-बूटी, जो हिमालय के शिखर से, धरती के गर्भ से, जंगल के कंदराओं से, पेड़-पौधो के सोमरस से, गंगा, यमुना सरस्वती के महाकुंभ अमृत से, योग-साधना के जीवन दायिनी से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पुष्प प्लवित हो रही है।

विचार-विमर्श:

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के संदर्भ में विचार-विमर्श यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल अकादमिक दक्षता या तकनीकी कौशल तक सीमित नहीं रह सकती। वर्तमान वैश्वीकरण, डिजिटल क्रांति और सामाजिक बदलाव के युग में, शिक्षा का उद्देश्य अधिक व्यापक और बहुआयामी हो गया है। इस दृष्टि से, भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का समन्वय अत्यंत प्रासंगिक और आवश्यक प्रतीत होता है। भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा को जीवनोपयोगी, अनुभवात्मक और नैतिक दृष्टिकोण से जोड़ती है। यह केवल ज्ञान के संचय पर आधारित नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मबोध, सामाजिक जिम्मेदारी और जीवन कौशलों के विकास पर भी बल देती है। गुरुकुल प्रणाली, योग, ध्यान, आयुर्वेद और दर्शनशास्त्र जैसी परंपराएँ यह दर्शाती हैं कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को संपूर्ण बनाने में निहित है। आधुनिक शोध भी यह सिद्ध करते हैं कि अनुभवात्मक और मूल्य आधारित शिक्षा मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यक्तित्व विकास में अधिक प्रभावी होती है। NEP 2020 भारतीय ज्ञान प्रणालियों (Indian Knowledge Systems – IKS) को पाठ्यक्रम में शामिल करने, मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने और बहुविषयक अध्ययन पर जोर देने का मार्गदर्शन करती है। यह नीति शिक्षा को केवल नौकरी-उन्मुख बनाने के बजाय, विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, नवाचार, बहुभाषिक क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करने का प्रयास करती है। नीति में शिक्षक की भूमिका को मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया है, जो गुरु–शिष्य परंपरा की आधुनिक व्याख्या है। UNESCO (2015) के वैश्विक अध्ययन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल तकनीकी दक्षता नहीं बल्कि मानव केंद्रित सतत विकास होना चाहिए। भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 के सिद्धांत वैश्विक शिक्षा लक्ष्यों के अनुरूप हैं। ये न केवल तकनीकी और रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता, पर्यावरणीय

संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी विकसित करते हैं। हालांकि NEP 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम में समाहित करने का प्रयास करती है, इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कई चुनौतियाँ हैं। शिक्षकों की प्रशिक्षण क्षमता, पाठ्यक्रम की तैयारी, स्थानीय और आधुनिक ज्ञान का संतुलन, तथा डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम का उपयोग प्रमुख चुनौतीपूर्ण क्षेत्र हैं। इसके बावजूद, यदि नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन निर्माण का उपकरण बना सकती है। विचार-विमर्श से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020 का संयोजन शिक्षा को समग्र, मूल्य आधारित, अनुभवात्मक और वैश्विक दृष्टिकोण से सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल विद्यार्थियों को बौद्धिक रूप से सक्षम बनाता है, बल्कि नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी उन्हें सशक्त बनाता है। इस दृष्टि से, NEP 2020 केवल शिक्षा सुधार की नीति नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुत्थान और आधुनिक शिक्षा के साथ उसके समन्वय की दिशा में ऐतिहासिक पहल है।

निष्कर्ष:

भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का समन्वय भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान करता है। यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप एक जीवंत, प्रासंगिक और उपयोगी ज्ञान प्रणाली है। इसमें निहित समग्र जीवन दृष्टि, नैतिक मूल्य, वैज्ञानिक चेतना और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना आज के वैश्विक संकटों—जैसे नैतिक पतन, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय असंतुलन और सामाजिक विघटन—के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़कर शिक्षा को रोजगारोन्मुखता से आगे ले जाकर जीवनोन्मुख बनाने का प्रयास करती है। मातृभाषा में शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन, अनुभवात्मक अधिगम, योग और जीवन कौशलों का समावेश तथा शिक्षक की भूमिका को मार्गदर्शक के रूप में पुनर्परिभाषित करना—ये सभी पहलें भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल भावना को प्रतिबिंबित करती हैं। इससे शिक्षार्थियों में न केवल ज्ञान और कौशल का विकास होगा, बल्कि चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय चेतना भी सुदृढ़ होगी। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और NEP 2020

का सफल कार्यान्वयन भारत को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और मूल्य-आधारित ज्ञान समाज के रूप में स्थापित कर सकता है। यह नीति शिक्षा को भारतीय संस्कृति से जोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की क्षमता रखती है। यदि इसे प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तन लाएगी, बल्कि राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण के व्यापक लक्ष्य की पूर्ति में भी सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ:

- Indian knowledge system (IKS) October 2023-@@RN Electronic Journal. DOI : 10.2139/Ssrn 4589986
- भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
- भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ. (2021). *भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ: अवधारणा और अनुप्रयोग*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
- राधाकृष्णन, एस. (2009). *भारतीय दर्शन*. राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।
- शर्मा, चंद्रधर. (2010). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
- उपनिषद. *ईश, केन, कठ, मुण्डक*. गीताप्रेस, गोरखपुर।
- श्रीमद्भगवद्गीता. (व्याख्या सहित). गीताप्रेस, गोरखपुर।
- नालंदा अध्ययन केंद्र. (2018). *प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली*. नई दिल्ली।
- कुमार, कृष्ण. (2014). *भारत में शिक्षा का इतिहास*. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
- UNESCO. (2015). *Rethinking Education: Towards a Global Common Good*. पेरिस।
- सरीन, वी. के. (2019). *भारतीय संस्कृति और शिक्षा*. प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
- झा कन्हैया (2022) शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा की अनिवार्यता दैनिक राष्ट्रीय जागरण सम्पादकीय आलेख, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा उत्तर प्रदेश
- प्रकाश कुमार, 21 वीं सदी की मांग पूरी करेगा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020.
- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 प्रारुप
- https://Wikipedia.org/wiki/ भारतीय ज्ञान परंपरा
- राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन भाग-2, पृष्ठ-337
- भारतीय ज्ञान परम्परा - विकिपीडिया https://hi.wikipedia.org/wiki/भारतीय ज्ञान_परम्परा

- भारतीय ज्ञान परंपरा- विविध आयाम बालकृष्ण राय https://www.amazon.in/-/hi/बालकृष्ण-राय
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास
- भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ. (2021). *भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ: अवधारणा और अनुप्रयोग*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- राधाकृष्णन, एस. (2009). *भारतीय दर्शन*. राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।
- शर्मा, चंद्रधर. (2010). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
- श्रीमद्भगवद्गीता. (2018). *व्याख्या सहित* (गीताप्रेस, गोरखपुर)।
- नालंदा अध्ययन केंद्र. (2018). *प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली*. नई दिल्ली।
- कुमार, कृष्ण. (2014). *भारत में शिक्षा का इतिहास*. ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली।
- सरीन, वी. के. (2019). *भारतीय संस्कृति और शिक्षा*. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
- Patwardhan, B., et al. (2015). *Ayurveda and Public Health: Integrating Traditional Knowledge into Modern Systems*. Journal of Ayurveda and Integrative Medicine, 6(2), 75–83.
- NCERT. (2020). *Position Paper on Indian Knowledge Systems*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।